12-भक्ति-नीति-माधुरी

कबीर

साँच बराबर तप नहीं, झूठ बराबर पाप।

जाके हिरदै साँच है, ताके हिरदै आप।।

वृच्छ कबहुँ नहिं फल भखै, नदी न संचै नीर।

परमारथ के कारने साधुन धरा शरीर।।

जहाँ ज्ञान तहँ धर्म है, जहाँ झूठ तहँ पाप।

जहाँ लोभ तहँ काल है, जहाँ छिमा तहँ आप।।

कबीर जाति-पाँति, ऊँच-नीच, धार्मिक-भेदभाव आदि का जोरदार खंडन करने वाले सन्त कवि थे। इनका दृष्टिकोण मानवतावादी था। इनकी रचनाएँ तीन रूपों - 'साखी' 'सबद' और 'रमैनी' में मिलती हैं।

रहीम

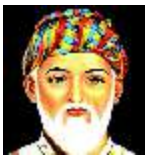

बिगरी बात बनै नहीं, लाख करै किन कोय।

रहिमन बिगरे दूध को, मथे न माखन होय।

जो रहीम उत्तम प्रकृति, का करि सकत कुसंग।

चंदन विष व्यापत नहिं, लिपटे रहत भुजंग।।

बड़े बड़ाई न करै, बड़े न बोलै बोल।

रहिमन हीरा कब कहे, लाख टका मो मोल।।

रहीम सम्राट अकबर के 'नवरत्नों' में से एक थे। इनका पूरा नाम अब्दुर्रहीम ख़ानख़ाना था। इनके नीतिपरक दोहे जन-जन में प्रसिद्ध हैं। 'रहीम दोहावली', 'रहीम सतसई' इनकी प्रसिद्ध रचनाएँ हैं।

सूरदास

मैया, कबहिँ बढ़ैगी चोटी ?

किती बार मोहिँ दूध पियत भई, यह अजहूँ है छोटी।

तू जो कहति बल की बेनी ज्यौं, ह्वै है लाँबी-मोटी।

काढ़त-गुहत न्हवावत जैहै, नागिनि सी भुइँ लोटी।

काचै दूध पियावति पचि-पचि, देति न माखन-रोटी।

सूरज चिरजीवौ दोउ भैया, हरि-हलधर की जोटी।।

सूरदास आगरा से मथुरा जाने वाली सड़क के किनारे 'रुनकता' नामक गाँव में पैदा हुए थे। इन्होंने कृष्ण की लीलाओं का बड़ा सुंदर वर्णन किया है। ये कृष्ण भक्त कवियों में सर्वोपरि हैं। सूरसागर इनका प्रसिद्ध महाकाव्य है।

अभ्यास

शब्दार्थ

हिरदै = हृदय भखै = खाता है

संचै = एकत्र करना चिरजीवौ = दीर्घायु

कुसंग = बुरी संगत जोटी = जोड़ी

बल की बेनी = बलदाऊ की चोटी काढ़त = बाल झाड़ना

गुहत = गूहना या चोटी करना भूइँ = जमीन

काचै = कच्चा पचि-पचि = बार-बार

भुजंग = सर्प विष = जहर

1. बोध प्रश्न: उत्तर लिखिए -

(क) ईश्वर किस तरह के लोगों के हृदय में निवास करता है ?

(ख) सज्जन व्यक्तियों की तुलना वृक्षों और नदियों से क्यों की गई है ?

(ग) बुरी संगत का प्रभाव किस प्रकार के लोगों पर नहीं पड़ता है ?

(घ) सज्जन व्यक्तियों की तुलना हीरे से क्यों की गई है ?

(ङ) कृष्ण अपनी माँ यशोदा से क्या शिकायत करते हैं ?

2. नीचे दी गई पंक्तियों का भाव स्पष्ट कीजिए -

(क) 'परमारथ के कारने साधुन धरा शरीर'।

(ख) 'साँच बराबर तप नहीं, झूठ बराबर पाप'।

(ग) 'रहिमन बिगरे दूध को, मथे न माखन होय'।

(घ) 'रहिमन हीरा कब कहे, लाख टका मो मोल'।

(ङ) 'काचै दूध पियावत पचि-पचि, देत न माखन रोटी'।

3. अधूरी पंक्तियों को पूरा कीजिए -

(क) जहाँ ज्ञान तहँ धर्म है .....

(ख) बिगरी बात बने नहीं .....

(ग) बड़े बड़ाई न करै .....

(घ) रहिमन हीरा कब कहे .....

4. तद्भव शब्दों का मिलान तत्सम शब्दों से कीजिए:-

'क' 'ख'

तद्भव शब्द तत्सम शब्द

बिसाल परमार्थ

परमारथ विशाल

छिमा मूर्ति

संचै वृक्ष

वृच्छ संचय

मूरति क्षमा

समय के साथ संसार की सभी भाषाओं के रूप बदलते हैं। संस्कृत के अनेक शब्द पालि, प्राकृत और अपभ्रंश से होते हुए हिंदी में आए हैं, इनमें से कुछ शब्द तो ज्यों का त्यों अपने मूल रूप में हैं और कुछ शब्द देश-काल के प्रभाव के कारण बदल गए हैं।

ऐसे शब्द जो संस्कृत से बदले रूप में हिंदी में आए हैं, तद्भव शब्द कहलाते हैं। जैसे - कालम 'क' के शब्द।

संस्कृत भाषा से मूल रूप में हिंदी में आए शब्दों को तत्सम शब्द कहते हैं। जैसे - कालम 'ख' के शब्द।

5. आपकी कलम से -

कबीर और रहीम के दोहों में कई सीख छिपी हैं। उन्हें पता करके अपनी कॉपी में लिखिए।

6. अब करने की बारी -

(क) इस पाठ के दोहे एवं पदों को प्रतिदिन पढ़कर दोहराइए। आप देखेंगे कि ये दोहे एवं पद आपको स्वतः याद हो जाएँगे। इन्हें याद करके कक्षा में सुनाइए।

(ख) कबीर और रहीम के अन्य दो-दो दोहों को ढूँढकर लिखिए।

(ग) रहीम, कबीर, सूरदास जैसे बहुत से कवियों की रचनाएँ इंटरनेट पर उपलब्ध हैं। अपने शिक्षक से अनुरोध करके कंप्यूटर अथवा मोबाइल फोन पर इन्हें सुनिए तथा वैसे ही सुनाने का अभ्यास कीजिए।

(घ) सूर्यकांत अपने पिता जी के साथ दशहरे का मेला देखने शहर गया। वहाँ जगह-जगह इस प्रकार के पोस्टर लगे थे -

बताइए -

- इस पोस्टर में किस बारे में बताया गया है ?
- यह आयोजन किसके द्वारा किया जा रहा है ?
- यह सम्मेलन किस अवसर पर किया जा रहा है ?
- कार्यक्रम की तिथि और समय क्या है ?
- कवि सम्मेलन कहाँ होगा ?
- सूर्यकांत को इसमें जाना चाहिए या नहीं, क्यों ?

दशहरा के पावन अवसर पर उत्तर प्रदेश सद्भावना समिति, ललितपुर की प्रस्तुति

अखिल भारतीय कवि सम्मेलन

दिनांक: 19/10/2018 समय: सायं 6 बजे से

स्थान: दशहरा ग्राउण्ड, ललितपुर

कृपया अधिक से अधिक संख्या में पधारकर कवियों की रचनाओं का आनंद लें।